काली पहाड़ी

विवेक मिश्र

परिचय-विवेक मिश्र

15 अगस्त 1970 में उत्तर प्रदेश के झांसी शहर में जन्म। विज्ञान में स्नातक, दन्त स्वास्थ विज्ञान में विशेष शिक्षा, पत्रकारिता एवं जनसंचार में स्नात्कोत्तर। दो कहानी संग्रह-'हनियाँ तथा अन्य कहानियाँ' एवं 'पार उतरना धीरे से' प्रकाशित। तीसरा कहानी संग्रह- 'ऐ गंगा तुम बहती हो क्यूँ?' शीध्र प्रकाश्य। लगभग सभी प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में कविताएं व कहानियाँ प्रकाशित। कुछ कहानियाँ संपादित संग्रहों व स्नातक स्तर के पाठ्यक्रमों में शामिल। साठ से अधिक वृत्तचित्रों की संकल्पना एवं पटकथा लेखन। 'light through a labyrinth' शीर्षक से कविताओं का अंग्रेजी अनुवाद राईटर्स वर्कशाप, कलकत्ता से तथा कहानिओं का बंगला अनुवाद डाना पब्लिकेशन, कलकत्ता से प्रकाशित।

संपर्क- 123-सी, पाकेट-सी, मयूर विहार फेज़-2, दिल्ली-91

मो;-9810853128

ईमेल;- vivek_space@yahoo.com

सूरज के अपने समय पर डूबने और निकलने से, कहीं दिन – रात, महिने और साल भी बदलते रहे होंगे, पर धड़मौच से पंद्रह किलोमीटर दूर घने जंगलों में आदिवासी टोला जिस पहाड़ी पर छिपा बैठा था, वहाँ समय टकटकी लगाए स्वयं को देख रहा था, उसकी पथराई आँखें झपकना भूल चुकी थीं। वह पहाड़ी देश, दुनिया, यहाँ तक कि अपने समय से भी कट गई थी। वह किसी ब्लैक होल में समाने के लिए किसी अज्ञात शक्ति से खिंची चली जा रही थी। पहाड़ी का आकार सिकुड़ता जा रहा था। उस पर बैठे लोग किसी गर्त में डूबे जा रहे थे। आश्चर्य! ऐसे भयावह समय में वे रोना, चीख़ना, चिल्लाना भूल गए थे। बल्कि जीवन से मुक्त होने के विचार भर से उनके चेहरे खिल उठे थे। उनकी आँखों में एक चमक थी। वे एक-एक कर ऐसे अन्धे कुएँ में डूब रहे थे, जिसमें सैंकड़ों सूरज मिलकर भी रोशनी का एक रेशा तक नहीं तैरा सकते थे। विश्रान्त अनल उस पहाड़ी के चारों तरफ़ बेतहाशा भाग रहे थे। वह पेड़ों, पत्थरों, चट्टानों, छोटी-बड़ी झाड़ियों को पकड़कर उस पहाड़ी को, उस पर बैठे लोगों को बचाने की आख़री कोशिश कर रहे थे। पर उनके हाथ कुछ नहीं आ रहा था। इस कोशिश ने उन्हें लहुलुहान कर दिया था।

अचानक विश्रान्त अनल के घर का दरवाज़ा किसी ने बड़ी ज़ोर से खटखटाया। इतनी ज़ोर से कि कई घन्टों से लगभग बेहोश पड़े विश्रान्त हड़बड़ा कर उठ बैठे। वह अपने भयावह सपने के टूटने पर भी उससे बाहर निकलने में बहुत कठिनाई महसूस कर रहे थे। दरवाज़ा खोलने में उनके घुटने और टखने की हड्डियाँ कई बार चटक गईं। बाहर गर्मियों की दोपहर का भयावह सन्नाटा था। दरवाज़े के खुलते ही कमरे के भीतर का भवका बाहर चलती लू से जा मिला। उनकी लगभग झपकना भूल चुकी लाल आँखें अपने आस-पास किसी अनिष्ट को तलाश रही थीं, पर बाहर कोई नहीं था।

दरवाज़े के सामने एक पुराना लिफ़ाफ़ा पड़ा था, जिस पर विश्रान्त अनल का नाम लिखा था। उन्होंने उसे उठाकर दरवाज़ा बन्द कर लिया।

वह लिफ़ाफ़ा खोलना चाहते थे, पर उनके हाथ लगातार कांप रहे थे। उनकी आँखें किसी चीज़ पर ठहर नहीं रही थीं। उन्हें हर चीज किसी चकरी की तरह लगातार घूमती हुई लग रही थी।

वह जिस पहाड़ी को बचाने के लिए अपने सपने में भागे जा रहे थे, दरअसल वह पहाड़ी, उसपर बैठे लोग, वह सब कुछ इस तरह अनायास ही उनके सामने आया था कि वह अभी तक विश्वास नहीं कर पा रहे थे कि वह स्वयं उस पहाड़ी पर थे और अब वहाँ से लौटकर अपने कमरे में आ गए थे। अभी भी वह पहाड़ी जो उनके कसबे पनरबा से अट्ठारह किलोमीटर दूर बसे गाँव धड़मौच से लगभग पंद्रह मील दूर टेढ़े-मेढ़े, कच्चे, दुर्गम रास्तों से गुज़रने के बाद मिलने वाले घने जंगलों के बीच

अकेली खड़ी थी, जहाँ पैदल ही पहुँचा जा सकता था, उन्हें अपनी ओर खींच रही थी। वह जानते थे कि उस पहाड़ी तक का रास्ता वही तय कर सकता था जो जंगलों की, पेड़ों की, जानवरों की, वहाँ के हवा-पानी और झरनों की मूक भाषा को, संकेतों और चिन्हों को पढ़ और समझ सकता हो। जो लाखों मील दूर चमकते सूरज की पृथ्वी पर पड़ती किरणों और घने जंगलों में पेड़ों के तनों पर रेंगती चींटियों की क़तारों के सम्बन्ध को पहचानता हो।

विश्रान्त अनल का उस पहाड़ी पर पहुँचना, उस जगह के तिलिस्म को समझना और यह विश्वास कर पाना कि यह पहाड़ी उन्हीं के प्रदेश में, उनके जिले के बीचों-बीच, उनके कसबे से कुछ मील की दूरी पर है, लगभग वैसा ही था, जैसे किसी खगोलशास्त्री के लिए पृथ्वी जैसा ही कोई ग्रह अपनी ही आकाश गंगा में खोज निकालना। आदिवासियों के लिए लम्बे समय से काम करते हुए भी वह यह नहीं जान पाए थे कि उनके कैम्प से इतनी कम दूरी पर घने जंगलों के बीच एक आदिवासी टोले के लोग अपने अस्तित्व की आख़री लड़ाई लड़ रहे हैं। ..... और इस लड़ाई में वे ठीक-ठीक यह भी नहीं जानते कि उनका शत्रु कौन है।...पर वे लगातार लड़ रहे थे और अब यह लड़ाई सिर्फ़ उनके अपने लिए नहीं थी, बल्कि उन जंगलों के लिए, उस तिलिस्मी दुनिया के लिए थी, जिसे उन्होंने सदियों से लगातार बदलती बाहरी दुनिया से बचा के रखा था। आज जब चारों तरफ़ से एक साथ उनकी इस दुनिया पर, उनके जंगलों पर हमला हो रहा था तब उनके राज्य की सरकारें जंगलों को नीलाम करने की योजनाएं बना रही थीं। हर बार सत्ता में आए मंत्रियों के चेहरों की चमक पुराने मंत्रियों के चेहरों की चमक से कुछ ज्यादा ही होती थी। पर काली पहाड़ी के टोले के लोग मंत्रियों के चेहरों की चमक और धड़मौच के पास के जंगलों के बीच अन्धकार में डूबी, सालों से रोशनी का इन्तज़ार करती उस पहाड़ी का अन्तर संबंध अभी तक नहीं समझ पाए थे, पर शायद विश्रान्त अनल इस संबंध को थोड़ा बहुत समझ गए थे। वह आदिवासियों की मदद करते-करते ऐसी कुछ बाते जान गए थे जो उन्हें नहीं जाननी चाहिए थीं। आज वह जिस गहरे संकट से घिरे खड़े थे उसकी धमक तो उन्हें पिछले कई दिनो से अपने जीवन में सुनाई दे रही थी पर वह शायद धीरे-धीरे इसके आदि हो चले थे।

उनके आज के हालात को जानने से पहले यदि उनकी बात थोड़ा-सा समय को पीछे खिसका कर करें तो हम देखेंगे कि वह हमेशा से आदिवासियों के मुद्दों को लेकर गंभीर तो थे पर जैसे आज वह दिखाई देते हैं वैसे सनकी और जुनूनी नहीं थे, पर यह बात भी पक्की है कि वह अपने कॉलेज के दिनों से ही अपनी धुन के पक्के आदमी थे। मज़बूत कदकाठी और साँवले रंग के, साफ और पारदर्शी आँखों वाले विश्रान्त अनल के बारे में उनके समाज शास्त्र के प्रोफेसर तिवारी हमेशा कहा करते थे कि उनके व्यक्तित्व में झूठ और अन्याय को भस्म कर डालने की शक्ति है। बेशक राजनैतिक पार्टिओं ने